

पंडित बंशीधर व्याकरणाचार्य अभिनंदन ग्रन्थ(फोल्डर नं. ५२९४७)  
सम्पादक – पन्नालाल जैन साहित्याचार्य आदि सम्पादक मण्डल

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन समितिके पदाधिकारी

प्रकाशन समितिके पदाधिकारी

आत्म कथ्य

सम्पादकीय

विषयक्रम

विषय क्रम खण्ड १ आशीर्वचन स्मरण शुभकामनएँ

बहुश्रुत विद्वान-----	१
मंगल आशीर्वाद -----	१
श्रद्धा सुमन -----	१
जैनागमके मर्मज्ञमनीषी -----	२
बहुमुखी प्रतिभाके धनी -----	२
सन्देश -----	३
राष्ट्रीय स्तरके मनीषीका अभिनन्दन -----	५
मूल आमनायके संरक्षक विद्वान -----	५
सरस्वतीके भण्डारको भरते रहें -----	५
कर्मठ जिनवाणी सेवक -----	५
जैन विद्वानोमें कीर्तीमान -----	६
समाजकी महान विभूति -----	६
मंगल कामना -----	६
सही अर्थोंमें सरस्वती वरदपुत्र -----	६
सेवा ही जिनका लक्ष्य हैं -----	७
गार्हस्थ्य संन्यास और विद्वताकी त्रिवेणी -----	७
जिनवाणीके परम आराधक -----	८
जैनजगतके गौरव पुंज -----	८
अनुकरणीय साहित्य साधना -----	८
श्रद्धा सुमन -----	९
जैन आगमके जागरुक प्रहरी -----	९
सिद्धान्तके लौह पुरुष -----	१०
नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठाकी प्रतिमूर्ति -----	१०
सादा जीवन उच्च विचार -----	११

समाजके वरिष्ठ विद्वान	११
तीर्थ भक्त पण्डितजी	११
प्रतिभाशाली विद्वान	११
वे स्वस्थ और दीर्घजीवी हों	११
आगमनिष्ठ विद्वान	१२
हार्दिक मनोभावना	१२
निर्भिक वक्ता	१२
मैं अभिनन्दन करता हूँ	१२
स्वतन्त्र विचारक एवं चिन्तक	१३
मैनें जैसा देखा समजा	१३
सफल कार्यकर्ता और यशस्वी विद्वान	१४
कर्मठ विद्वान	१४
क्या तुम्हारे सहपाठी देव हैं	१५
एकान्तका विरोध आपका लक्ष्य	१५
सरलता व सहजताके धनी	१६
समाजके लिए गौरव	१६
अनुपम व्यक्तित्वकी मूर्ति	१७
जैनधर्म और सिद्धान्तके अधिकारी विद्वान	१७
सादा जीवन और उच्च विचारके धनी	१८
शुभकामनाएँ	१८
धर्म और समाजके सच्चे हितचिन्तक	१९
मंगल कामनाएँ	१९
आपका अभिनन्दन जिनवाणीका अभिनन्दन हैं	१९
लौह लेखनीके धनी	२०
जैन आगमके उच्चकोटिके विद्वान	२०
जैन दर्शनके बंशीधर	२१
सिद्धान्त रक्षक	२१
स्वाभिमान और प्रज्ञाकी मूर्ति	२२
चिन्तलशील विद्वत्प्रवर	२२
सम्पूर्ण जीवन बेमिशाल हैं	२३
आगमनिष्ठ विद्वान	२३
पांडित्यके अभिनव हस्ताक्षर	२४
पाण्डित्यकी प्रतिमूर्ति	२५
अद्वितीय साहित्य साधक	२६
मेरे नानाजी	२६

यशस्वी सारस्वत -----	२७
मौन साधक -----	२७
असाधारण मेघावी -----	२७
जिनवाणीनन्दनका अभिनन्दन -----	२८
बुन्देलखण्डकी थाती -----	२८
स्वतंत्र व्यक्तित्वके धनी -----	२९
सादर अभिनन्दन -----	२९
आदर्श विद्वान -----	३०
सरस्वतीके अनुरागी -----	३०
देश श्रुत और समाजसेवी -----	३०
महान व्यक्तित्वके धनी -----	३१
बहुमुखी प्रतिभाके धनी -----	३१
जिनवाणीके अपूर्व सेवक -----	३१
धर्म समाज और राष्ट्र सेवाके संगम -----	३२
शुभकामनाएँ -----	३२
निरभिमान व्यक्तित्व-----	३३
मेरी उन्हें शुभ मंगल कामनाएँ -----	३३
समाजकी नब्जके पारिखी -----	३४
अभिवन्दनीय पण्डितजी -----	३४
शान्तिप्रिय क्रान्तिकारी समाज सेवक -----	३५
जैनधर्मके प्रकाण्ड विद्वानका सम्मान -----	३६
सालेवी भौआके लिए भावाज्जलि -----	३७
कन्या राशिका चमत्कार -----	३८
समाजके मार्गदर्शक -----	३९
एक जागरूक मनीषी -----	४०
बंशीधरो जयतात -----	४१
सरस्वतीके वरद पुत्र हे बंशीधर व्याकरणाचार्य -----	४२
सविनय अभिनन्दन -----	४३
हे सरस्वतीके शत शत वन्दन शत शत प्रणाम -----	४४
विनय सुमन -----	४५
सरस्वतीके वरदपुत्रका शत शत अभिनन्दन हैं -----	४६
बंशीधरकी वंशी गूँज उठी -----	४७
शब्द सुमन से अभिनन्दन हैं -----	४८
सुमनाज्जलि देते हैं -----	४९
हे सरस्वती के वरदपुत्र विद्वदवर तुमको शत प्रणाम -----	५०

बंशीधरके ही प्रकाश से जिनवाणी हैं जगमग दमकी -----	५१
युग गये गुण गान -----	५२
गुरुवर जीवें वर्ष हजार -----	५३
आपको करें समर्पित -----	५३
जैन साहित्याराधनामें समर्पित -----	५४
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं-----	५४
पण्डित परम्पराके मूर्धन्य मनीषी -----	५४
किमाश्चर्यमत परम -----	५५
स्तुत्य निर्णय -----	५६
नैतिकताकी प्रतिमूर्ति -----	५६
पूज्य पण्डितजीसे एक बार्ता -----	५७
आगमके पक्षधर -----	५८
बहु आयामी व्यक्तित्व -----	५९
अभिनन्दनीयका अभिनन्दन -----	५९
विशिष्ट प्रतिभाके धनी -----	६०
मंगल कामना -----	६०
एक निस्पृही साधु सम वास्तविक गृहस्थ-----	६१
श्रद्धेय पण्डितजीका स्तुत्य अभिनन्दन -----	६२
देश समाज एवं राष्ट्रकी अनुपम विभूति -----	६२
<b>खण्ड २ जीवन परिचय भेंट वार्ता व्यक्तित्व तथा कृतित्व</b>	
श्रद्धेय पण्डितजी एक परिचय – पं. दुलीचन्द्र जैन -----	१
साक्षात्कार (डॉ. कोठिया और व्याकरणाचार्य) – डॉ. दरबारीलाल कोठिया -----	९
विशाल व्यक्तित्व के धनी – डॉ. कस्तूरचन्द्र कासलीवाल -----	१६
सॉरई के प्राचीन जिनमन्दिर का वेदिका लेख एक दस्तावेज – डॉ. दरबारीलाल कोठिया -----	२४
सॉरई पूज्य पिताजी की जन्मभूमि - श्री विनीत कोठिया -----	२७
गोलापूर्वान्वय एक परिशीलन – डॉ. कस्तूरचन्द्र -----	३२
अप्रतिम प्रतिभा के धनी – पं. पन्नालाल साहित्याचार्य -----	५१
वन्दनीय व्यक्तित्व के धनी – श्री नीरज जैन -----	५३
ख्याति लाभ मानसे परे – प्रो. खुशालचन्द्र गोरावाला -----	५६
साधना पथ के निष्ठावान पथिक – श्री यशपाल जैन -----	५९
विलक्षण प्रतिभा के मनीषी – प्रो. उदयचन्द्र जैन -----	६१
बीसवी सदीके गम्भीर दार्शनिक विद्वान – प्रो. राजाराम जैन -----	६२
राष्ट्र एवं समाज की अतुलनीय विभूति – डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन -----	६४
विद्वत्ता और सहृदयता के संगम – डॉ. रतनचन्द्र जैन -----	६४
स्वाभिमानी विद्वान – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर -----	६६

संस्मरण शाह अमृतकाल जैन बीना – डॉ. कस्तूरचन्द्र कासलीवाल -----	६७
जैनतत्वमीमांसा की मीमांसा शास्त्रीय मान्यताके परिप्रेक्ष्यमें – पं. बलभद्र जैन -----	६९
जैनदर्शनमें कार्य कारणभाव और कारक व्यवस्था एक समीक्षा – डॉ. पन्नालाल साहित्याचार्य -----	७५
जैनदर्शनमें कार्य कारणभाव और कारक व्यवस्था एक अनुशीलन – श्री नीरज जैन -----	७७
जयपुर (खानिया) तत्वचर्चा और उसकी समीक्षा एक मूल्यांकन – डॉ. फूलचन्द्र प्रेमी -----	८०
भाग्य और पुरुषार्थ एक नया अनुचिन्तन समीक्षात्मक समीक्षा – डॉ. कस्तूरचन्द्र कासलीवाल -----	८८
पर्यायें क्रमबद्ध भी होती हैं और अक्रमबद्ध भी एक समीक्षा – डॉ. सुदर्शनलाल जैन -----	९०
पर्यायें क्रमबद्ध भी होती हैं और अक्रमबद्ध भी एक अध्ययन – डॉ. विजयकुमार जैन -----	९३
जैनशासनमें निश्चय और व्यवहार एक परिशीलन – स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति -----	९४
जैनशासनमें निश्चय और व्यवहार एक विमर्श – डॉ. दरबारीलाल कोठिया -----	९८
मनस्वी मनीषी कुछ संस्मरण – पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री -----	१०१
श्रद्धा सुमन – पं. शोभालाल जैन -----	१०२
<b>खण्ड ३ धर्म और सिद्धान्त</b>	
तीर्थंकर महावीरकी धर्मतत्व देशना - -----	३
जैन दर्शनमें आत्मतत्व -----	१८
निश्चय और व्यवहार मोक्ष मार्ग -----	३१
निश्चय और व्यवहार धर्ममें साध्य साधकभाव -----	५१
निश्चय और व्यवहार शब्दोंका अर्थाख्यान -----	५७
व्यवहारनयकी अभूतार्थताका अभिप्राय -----	८७
संसारी जीवोंकी अनन्तता -----	९२
जैनदर्शनमें भव्य और अभव्य -----	९८
जीव दया एक परिशीलन -----	१०३
जैनागममें कर्मबन्ध -----	११६
आगममें कर्म बन्धके कारण -----	१२५
गोत्र कर्मके विषयमें मेरा चिन्तन -----	१३३
भुज्यमान आयुमें अपकर्षण और उत्कर्षण -----	१३८
क्या असंजी जीवोंमें मनका सम्दाव हैं -----	१४१
पर्यायें क्रमबद्ध भी होती हैं और अक्रमबद्ध भी -----	१४७
जयपुर खानिया तत्वचर्चा और उसकी समीक्षाके अन्तर्गत उपयोगी प्रश्नोत्तर १,२,३,४, की सामान्य समीक्षा -----	१६६
<b>खण्ड ४ दर्शन और न्याय</b>	
भारतीय दर्शनोंका मूल आधार -----	३
जैनदर्शनमें प्रमाण और नय-----	९

ज्ञानके प्रत्यक्ष और परोक्ष भेदोंका आधार-----	१४
जैनदर्शनमें नयवाद -----	२०
अनेकान्तवाद और स्याद्वाद -----	४०
स्याद्वाद दर्शन और उसके उपयोगका अभाव -----	४४
दर्शनोपयोग और ज्ञानोपयोगका विश्लेषण -----	४८
जैनदर्शनमें दर्शनोपयोगका स्थान -----	५८
जैनदर्शनमें वस्तुके स्वरूप एक दार्शनिक विश्लेषण -----	६२
जैनदर्शनमें सप्ततत्त्व और षट्द्रव्य -----	६८
अर्थमें मूल और उसका समाधान -----	८०
<b>खण्ड ५ साहित्य और ईतिहास</b>	
वीरांष्टकम समस्या कान्ताकटाक्षाक्षत (क्षता) -----	१
समयसारकी रचनामें आचार्य कुन्दकुन्दकी दृष्टि -----	३
तत्त्वार्थ सूत्रका महत्त्व -----	७
जैन व्याकरणकी विशेषताएँ -----	१२
षट्खण्डागमके संजद पदपर विमर्श -----	१८
सांस्कृतिक सुरक्षाकी उपादेयता -----	२७
जैन संस्कृति और तत्त्वज्ञान -----	३४
युगधर्म बननेका अधिकारी कौन-----	४४
ऋषभदेवसे वर्तमान तक जैनधर्मकी स्थिति -----	४८
<b>खण्ड ६ संस्कृति और समाज</b>	
हमारी द्रव्य पूजाका रहस्य -----	१
साधत्वमें नग्नतका महत्त्व -----	८
जैनदृष्टिसे मनुष्योंमें उच्च नीच व्यवस्थाका आधार -----	१५
भगवान महावीरका समाज दर्शन -----	२६
जैन मंदिर और हरिजन -----	२९
भारतीय संस्कृतिके सन्दर्भमें हिन्दु शब्दका व्यापक अर्थ -----	३३
परिशिष्ट -----	३४